नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत के नए उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन

देश के 15वें उपराष्ट्रपति के चुनाव परिणाम सामने आ चुके हैं. राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के उम्मीदवार तथा महाराष्ट्र के राज्यपाल रहे सी. पी. राधाकृष्णन ने स्पष्ट बहुमत से जीत दर्ज की है. विपक्ष के उम्मीदवार न्यायमूर्ति सुदर्शन रेड्डी को 300 मतों पर संतोष करना पड़ा. 98.2 प्रतिशत मतदान और 16 अवैध मतों के बीच यह चुनाव केवल संख्याओं का खेल नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र के बदलते समीकरणों का दर्पण भी है.

राधाकृष्णन को कुल 452 मत प्राप्त हुए, जो एनडीए के अधिकृत समर्थन से भी अधिक हैं. इसमें विपक्षी पाले से आए 14 मत निर्णायक सिद्ध हुए. साथ ही, 15 अमान्य मतों ने विपक्ष के गणित को और कमजोर किया. यह परिदृश्य दर्शाता है कि विपक्ष की घोषित एकजुटता व्यवहार में ढीली पड़ गई और सत्ता पक्ष ने अपनी रणनीति से अतिरिक्त लाभ अर्जित कर लिया. इंडिया गठबंधन ने सुदर्शन रेड्डी को उम्मीदवार बनाकर दक्षिण भारत से राजनीतिक संदेश देने का प्रयास किया. रेड्डी ने सांसदों से अंतरात्मा की आवाज़ पर मतदान करने की अपील की थी, किंतु परिणाम ने दिखाया कि विपक्ष अपने ही पाले को एकजुट रखने में असफल रहा. कई दलों का मतदान से दूर रहना और कुछ सांसदों का असहयोग विपक्ष की राजनीतिक कमजोरी को उजागर करता है.

एनडीए ने चुनाव को मात्र औपचारिकता मानने की भूल नहीं की. संगठनात्मक मजबूती और राजनीतिक प्रबंधन के साथ उन्होंने राधाकृष्णन की छवि–स्वच्छ, अनुभवी और सामाजिक पृष्ठभूमि से जुड़ी–को प्रमुखता दी. तमिलनाडु के कोंगु वेल्लालर ओबीसी समुदाय से आने वाले राधाकृष्णन दो बार सांसद रह चुके हैं और उनका चयन सत्ता पक्ष की सामाजिक व राजनीतिक रणनीति का भी हिस्सा रहा. अब सबसे बड़ी चुनौती राधाकृष्णन के सामने राज्यसभा का संचालन है. उपराष्ट्रपति का पद केवल औपचारिक अधिकार नहीं, बल्कि विचारों के सदन को संतुलित ढंग से चलाने की कसौटी है. हाल के वर्षों में विपक्ष ने बार-बार शिकायत की है कि उसे पर्याप्त अवसर नहीं मिलता, बहसों को सीमित किया जाता है. नए सभापति से अपेक्षा रहेगी कि वे इन आशंकाओं को दूर करें और सदन को वास्तव में विमर्श का मंच बनाएं.

दरअसल, आज का राजनीतिक परिदृश्य ध्रुवीकरण और कटु बहसों से भरा है. ऐसे में सभापति का निष्पक्ष बने रहना अत्यंत आवश्यक है. सत्ता पक्ष की बहुलता और विपक्ष की मुखरता–दोनों का संतुलन साधना उपराष्ट्रपति की सबसे बड़ी जिम्मेदारी होगी. यदि राधाकृष्णन सभी दलों को समान अवसर देंगे और सहमति व संवाद की परंपरा को मजबूत करेंगे तो यह न केवल संसद की गरिमा बढ़ाएगा बल्कि लोकतंत्र को भी नई ऊर्जा प्रदान करेगा. कुल मिलाकर उपराष्ट्रपति चुनाव का यह परिणाम सत्ता पक्ष की रणनीतिक सफलता और विपक्ष की कमजोरियों का प्रत्यक्ष संकेत है. किंतु वास्तविक परीक्षा अब प्रारंभ होती है. सी. पी. राधाकृष्णन से देश की अपेक्षा है कि वे केवल सत्तापक्ष के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि पूरे सदन के संरक्षक सिद्ध हों. लोकतंत्र की प्रतिष्ठा इसी में निहित है कि संसद सभी आवाज़ों का मंच बने और राज्यसभा अपने गौरवशाली स्वरूप में कार्य करती रहे.

जाहिर है नए उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती राज्यसभा की निष्पक्षता बनाए रखने, सत्ता और विपक्ष के बीच संवाद का सेतु बनने, ध्रुवीकृत राजनीति में संतुलन साधने तथा संसदीय परंपराओं की गरिमा को पुनर्स्थापित करने की होगी. सदन को विमर्श और सहमति का मंच बनाना उनकी कसौटी है.

राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित हैं मोहन भागवत

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

आज 11 सितंबर है. यह दिन अलग-अलग स्मृतियों से जुड़ा है. एक स्मृति 1893 की है. जब स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में विश्वबंधुत्व का संदेश दिया और दूसरी स्मृति है 9/11 का आतंकी हमला. जब विश्व बंधुत्व को सबसे बड़ी चोट पहुंचाई गई. आज के दिन की एक और विशेष बात है. आज एक ऐसे व्यक्तित्व का 75वां जन्मदिवस है जिन्होंने वसुधैवकुटुंबकम के मंत्र पर चलते हुए समाज को संगठित करने. समता-समरसता और बंधुत्व की भावना को सशक्त करने में अपना पूरा जीवन समर्पित किया है. संघ परिवार में जिन्हें परम पूजनीय सरसंघचालक के रूप में श्रद्धाभाव से संबोधित किया जाता है. ऐसे आदरणीय मोहन भागवत जी का आज जन्मदिन है.

यह एक सुखद संयोग है कि इसी साल संघ भी अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है. मैं भागवत जी को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर उन्हें दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करें. मेरा मोहन भागवत जी के परिवार से बहुत गहरा संबंध रहा है. मुझे उनके पिता. स्वर्गीय मधुकरराव भागवत जीके साथ निकटता से काम करने का सौभाग्य मिला था. मैंने अपनी पुस्तक ज्योतिपुंज में मधुकररावजी के बारे में विस्तार से लिखा भी है. वकालत के साथ-साथ मधुकरराव जी जीवनभर राष्ट्र निर्माण के कार्य में समर्पित रहे. अपनी युवावस्था में उन्होंने लंबा समय गुजरात में बिताया और संघ कार्य की मजबूत नींव रखी.

मधुकरराव जी का राष्ट्र निर्माण के प्रति झुकाव इतना प्रबल था कि अपने पुत्र मोहनराव को भी इस महान कार्य के लिए निरंतर गढ़ते रहे. एकपारसमणि मधुकरराव ने मोहनराव के रूप में एक और पारसमणि तैयार कर दी. भागवत जी का पूरा जीवन सतत प्रेरणा देने वाला रहा है. वे 1970 के दशक के मध्य में प्रचारक बने. सामान्य जीवन में प्रचारक शब्द सुनकर ये भ्रम हो जाता है कि कोई प्रचार करने वाला व्यक्ति होगा. लेकिन जो संघ को जानते हैं उनको पता है कि प्रचारक परंपरा संघ कार्य की विशेषता है. गत 100 वर्षों में देशभक्ति की प्रेरणा से भरे हजारों युवक-युवतियों ने अपना घर-परिवार त्यागकर के पूरा जीवन संघ परिवार के माध्यम से राष्ट्र को समर्पित किया है. भागवत जी भी उस महान परंपरा की मजबूत धुरी हैं.

भागवत जी ने उस समय प्रचारक का दायित्व संभाला. जब तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने देश पर इमरजेंसी थोप दी थी. उस दौर में प्रचारक के रूप में भागवत जी ने आपातकाल-विरोधी आंदोलन को निरंतर मजबूती दी. उन्होंने कई वर्षों तक महाराष्ट्र के ग्रामीण और पिछड़े इलाकों. विशेषकर विदर्भ में काम किया. 1990 के दशक में अखिल भारतीय शारीरिक प्रमुखके रूप में मोहन भागवत जी के कार्यों को आज भी कई स्वयंसेवक स्नेहपूर्वक याद करते हैं. इसी कालखंड में मोहन भागवत जी ने बिहार के गांवों में अपने जीवन के अमूल्य वर्ष बिताए और समाज को सशक्त करने के कार्य में समर्पित रहे.

20वीं सदी के आखिरी पड़ाव पर वेअखिल भारतीय प्रचार प्रमुख बने.वर्ष 2000 में वेसरकार्यवाहबने और यहाँ भी भागवत जी ने अपनी अनोखी कार्यशैली से हर कठिन परिस्थिति को सहजता और सटीकता से संभाला. 2009 में वेसरसंघचालकबने और आज भी अत्यंत ऊर्जा के साथ कार्य कर रहे हैं. भागवत जी ने राष्ट्र प्रथम की मूल विचारधारा को हमेशा सर्वोपरि रखा. सरसंघचालक होना मात्र एक संगठनात्मक जिम्मेदारी नहीं है. यह एक पवित्र विश्वास है. जिसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी दूरदर्शी व्यक्तित्वों ने आगे बढ़ाया है और इस राष्ट्र के नैतिक और सांस्कृतिक पथ को दिशा दी है. असाधारण व्यक्तियों ने इस भूमिका को व्यक्तिगत त्याग. उद्देश्य की स्पष्टता और माँ भारती के प्रति अटूट समर्पण के साथ निभाया है. यह गर्व की बात है कि मोहन भागवत जी ने न केवल इस विशाल जिम्मेदारी के साथ पूर्ण न्याय किया है. बल्कि इसमें अपनी व्यक्तिगत शक्ति. बौद्धिक गहराई और सहृदय नेतृत्व भी जोड़ा है.

भागवत जी का युवाओं से सहज जुड़ाव है और इसलिए उन्होंने अधिक से अधिक युवाओं को संघ कार्य के लिए प्रेरित किया है. वे लोगों से प्रत्यक्ष संपर्क में रहते हैं. और संवाद करते रहते हैं. श्रेष्ठ कार्य पद्धति को अपनाने की इच्छा और बदलते समय के प्रति खुला मन रखना. ये मोहनजी की बहुत बड़ी विशेषता रही है. अगर हम व्यापक संदर्भ में देखते हैं तो संघ की 100 साल की यात्रा में भागवत जी का कार्यकाल संघ में सर्वाधिक परिवर्तन का कालखंड माना जाएगा. चाहे वो गणवेश परिवर्तन हो. संघ शिक्षा वर्गों में बदलाव हो. ऐसे अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन उनके निर्देशन में संपन्न हुए. कोरोना काल में मोहन भागवत जी के प्रयास विशेष रूप से याद आते है. उस कठिन समय में उन्होंने स्वयंसेवकों को सुरक्षित रहते हुए समाजसेवा करने की दिशा दी और टेक्नोलॉजी का उपयोग बढ़ाने पर बल दिया. उनके मार्गदर्शन में स्वयंसेवकों ने जरूरतमंदों तक हरसंभव सहायता पहुँचाई. जगह-जगह मेडिकल कैंप लगाए. उन्होंने वैश्विक चुनौतियों और वैश्विक विचार को प्राथमिकता देते हुए व्यवस्थाओं को विकसित किया.

मैं माँ भारती की सेवा में समर्पित मोहन भागवत जी के दीर्घ और स्वस्थ जीवन की पुन: कामना करता हूँ. उन्हें जन्मदिवस पर अनेकानेक शुभकामनाएं.

दिल्ली डायरी

उपराष्ट्रपति चुनाव में भाजपाई चुनाव प्रबंधन के सामने बिखरा इंडिया समूह

प्रवेश कुमार मिश्र

उपराष्ट्रपति चुनाव में राजग उम्मीदवार का पलड़ा आरंभिक दिनों से ही संख्याबल के हिसाब से भारी था फिर भी जिस तरह से इंडिया समूह द्वारा संयुक्त रूप से मोर्चाबंदी की गई थी उसके कारण चुनाव अंतिम दिन तक रोमांच से भरा हुआ था. लेकिन भाजपाई रणनीतिकारों ने चुनाव प्रबंधन को चार स्तर में बांटकर न सिर्फ अपनी एकजुटता को बरकरार रखा बल्कि दूसरे खेमे के एक दर्जन से ज्यादा सांसदों को क्रॉस वोटिंग कराने सफलता भी हासिल कर ली .

भाजपा ने जिस तरह से प्रांतीय स्तर पर सांसदों को एकजुट रखने की रणनीति बनाई थी उसकी चर्चा चुनाव के दिन भी सुनाई दी. चर्चा है कि वोट को एकजुट रखने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने व्यक्तिगत रूप से राजग के लगभग सभी सांसदों से बातचीत की थी.

केन्द्रीय मंत्री पीयुष गोयल, किरण रिजिजू, सहित पार्टी महासचिव विनोद तावड़े व विभिन्न प्रदेशों के प्रभारी भी सांसदों से लगातार संपर्क रखे हुए थे. हालांकि इंडिया समूह की ओर से भी एकजुटता का प्रयास किया गया था.

नहीं सुलझ रहा है सीट बंटवारे का पेंच

वोट अधिकार यात्रा की कथित सफलता के बाद बिहार में सत्ता परिवर्तन की उम्मीद लगा रहे राजद व कांग्रेस के रणनीतिकारों के बीच अपने अपने पाले में ज्यादा से ज्यादा सीट लेने की होड़ लगी हुई है. चर्चा है कि कांग्रेसी रणनीतिकारों ने राजद नेताओं को स्पष्ट संदेश दिया है कि मौजूदा समय में जिस तरह का माहौल बना है उसके कारण व कारक कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी हैं ऐसे में कांग्रेस को कम करके नहीं आंका जा सकता है. पटना से लेकर दिल्ली तक हुए कई दौर की बैठकों के बाद कांग्रेस पार्टी ने अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव और तेजस्वी यादव के सामने 70 सीट का प्रस्ताव रख दिया है. हालांकि अभी तक 40 सीटों पर दोनों दलों के बीच रजामंदी हुई है.

पिछले दिनों राहुल गांधी के नेतृत्व में हुए बैठक में चुनावी रणनीति तैयार की गई है. कांग्रेस ने भाजपा व जदयू से मुकाबले के लिए अलग-अलग रणनीति बनाई है. कहा जा रहा है कि 20 सितंबर तक समझौते की रूपरेखा तैयार करने के बाद तेजस्वी यादव व राहुल गांधी की बैठक होगी.

यक्ष प्रश्न बना भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का चुनाव

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का कार्यकाल समाप्त होने के बाद लगातार कयास लगाया जा रहा है कि जल्द ही चुनाव की घोषणा होगी और सर्वसम्मति से नए अध्यक्ष का चुनाव संपन्न हो जाएगा. लेकिन दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में अध्यक्ष पद का सवाल यक्ष प्रश्न बना हुआ है.

जहां एक तरफ चर्चा है कि उपराष्ट्रपति चुनाव के कारण इसमें देरी हुई है और अब जल्दी इसके लिए पार्टी आगे बढ़ेगी लेकिन दूसरी तरफ चर्चा है कि जेपी नड्डा के नेतृत्व में पार्टी का प्रदर्शन बेहतर रहा है ऐसे में बिहार विधानसभा चुनाव तक नए अध्यक्ष का चुनाव टाला भी जा सकता है.

बिहार चुनाव में नए चेहरों पर दांव

बिहार विधानसभा चुनाव में सत्ता विरोधी लहर से बाहर निकलने के लिए भाजपाई रणनीतिकारों ने सख्त रणनीति तैयार करते हुए लगभग तीस फीसदी सीटों पर नए व निर्विवादित नेताओं को मैदान में उतारने की रणनीति बनाई है. चर्चा है कि पिछले दिनों गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में हुई बैठक में यह स्पष्ट कर दिया गया कि विभिन्न माध्यमों से प्राप्त किए गए सर्वे रिपोर्ट में जिन मौजूदा विधायकों के खिलाफ तीस फीसदी असंतोष है उन्हें उम्मीदवार नहीं बनाया जाएगा. इतना ही नहीं उम्रदराज व लगातार दो बार हारे किसी भी नेता को टिकट नहीं दिया जाएगा. स्थानीय सांसदों द्वारा प्रस्तावित उम्मीदवार के लिए भी सख्त नियम लागू रहेगा. सांसदों द्वारा प्रस्तावित उम्मीदवारों को जिताने की पूरी जिम्मेदारी सांसदों पर रखने की बात कही गई है ताकि गलती से गलत उम्मीदवार का चयन नहीं हो सके. संभवत: इसी वजह से दिल्ली में मौजूद बिहार के भाजपाई सांसद अब संभावित उम्मीदवारों को दिल्ली परिक्रमा के बजाय क्षेत्र में रहने की सलाह देते दिख रहे हैं.

नागरिकता का सबूत नहीं है आधार कार्ड

यद्यपि सुप्रीम कोर्ट ने बिहार में चल रहे मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के लिए आधार कार्ड को 12वें दस्तावेज के रूप में मानने का चुनाव आयोग को निर्देश दिया है, लेकिन फिर भी इसे नागरिकता का प्रमाण नहीं माना जाएगा. इसकी वजह यह है कि भारत में नागरिकता किसी एक दस्तावेज पर आधारित नहीं होती. 1955 के नागरिकता अधिनियम के अनुसार किसी व्यक्ति का कब जन्म हुआ तथा उसके माता-पिता की कानूनी स्थिति क्या थी, जैसी बातें भी महत्व रखती हैं. चुनाव आयोग के पास अधिकार रहेगा कि वह आधार कार्ड की प्रामाणिकता की जांच कर ले. आधार सिर्फ पहचान का ही प्रमाण है. घुसपैठियों की समस्या को स्वीकार करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि आधार को व्यक्ति की नागरिकता का सबूत नहीं माना जा सकता. आधार से वोटर लिस्ट में नाम जोड़ या घटाए जा सकते हैं. सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) नागरिकता का फैसला नहीं कर सकते. एसआईआर के लिए निवास प्रमाणपत्र के तौर पर आधार को स्वीकार किया जाए. पहले यह व्यवस्था 65 लाख हटाए गए नामों के लिए थी, लेकिन अब सभी मतदाताओं पर लागू होगी. जस्टिस सूर्यकांत व जस्टिस जॉयमाला बागची की पीठ ने कहा कि आधार केवल निवास का प्रमाण है. वह नागरिकता का सबूत बिल्कुल नहीं है. कोई भी अवैध व्यक्ति वोटर लिस्ट में शामिल नहीं किया जाना चाहिए. चुनाव आयोग को हक है कि आधार कार्ड की जांच-पड़ताल करे ताकि कोई फर्जी कार्ड का इस्तेमाल न करने पाए. चुनाव आयोग के वकील ने स्पष्ट किया कि आधार को 12वें दस्तावेज के तौर पर जोड़ने से किसी भी प्रकार का व्यावहारिक लाभ नहीं है. क्योंकि ड्राफ्ट मतदाता सूची में शामिल 7.24 करोड़ मतदाताओं में से 99.6 प्रतिशत ने पहले ही अपने दस्तावेज जमा करा दिए हैं.

चुनाव आयोग ने विशेष गहन पुनरीक्षण पर अपने 24 जून के आदेश में कहा था कि ईआरओ संदिग्ध विदेशियों के मामले नागरिकता कानून 1955 के तहत सक्षम अधिकारियों के पास भेजेगा. विदेशी (न्यायाधिकरण) आदेश 1964 के अनुसार निर्णय लिया जाएगा कि कोई व्यक्ति विदेशी घुसपैठिया तो नहीं है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

गजरा लगा के ऑस्ट्रेलिया न जाना वरना भरना पड़ेगा भारी जुर्माना

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, आंखों में कजरा और बालों में गजरा किसी भी महिला को आकर्षक व ग्रेसफुल बना देता है. आपने गीत सुना होगा-कजरारे-कजरारे तेरे काले काले नैना! जहां तक गजरा की बात है, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में महिलाएं सुगंधित फूलों का गजरा लगाकर अपना श्रृंगार करती हैं. भगवान राम ने भी वनवास के दौरान पुष्पों के आभूषण बनाकर सीताजी का श्रृंगार किया था.

हमने कहा, आज आपने कजरा और गजरा की चर्चा क्यों छेड़ दी ? वक्त के साथ चीजें बदलती हैं. पहले घी का दीया जलाकर काजल बनाया जाता था. आजकल काजल की डिब्बी की जगह आई लाइनर ने ले ली है. रही बात फूलों के गजरे की, तो त्योहारों पर या फिर ऐसे ही महिलाएं वेणी, चोटी या जूड़े में गजरा बांध लेती हैं. लखनऊ में रईस लोग कलाई पर गजरा बांधकर मुजरा सुनने जाया करते थे.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, गजरे की वजह से मलयालम फिल्मों की अभिनेत्री नव्या नायर मुसीबत में फंस गई. उस पर ऑस्ट्रेलिया में 1.14 लाख रुपए का जुर्माना

भरने की नौबत आ गई. हुआ यह कि ऑस्ट्रेलिया के मेलबोर्न शहर में मल्याली एसोसिएशन ने ओणम उत्सव आयोजित किया था जिसमें सहभागी होने के लिए जब वह ऑस्ट्रेलिया जाने लगी तो उसके पिता ने उसके लिए फूलों का गजरा खरीदा. नव्या ने एक गजरा अपने हैंडबैग में रख लिया ताकि कोच्चि सिंगापुर प्रवास के दौरान लगा सके और दूसरा गजरा बाद में इस्तेमाल के लिए रखा. जब वह मेलबोर्न पहुंची तो हैंडबैग में रखे गजरे के कारण वह दिक्कत में फंस गई. वहां पौधों या फूलों के साथ उड़ान पर सख्त मनाही है, क्योंकि इनमें रहने वाले कीटकों की वजह से बीमारी फैल सकती है. अभिनेत्री नव्या को जुर्माने में मोटी रकम भरनी पड़ी. उसने सोशल मीडिया हैंडल पर यह जानकारी देते हुए कहा- गलती तो गलती ही होती है.

हमने कहा, ऑस्ट्रेलिया के लोग गजरे का महत्व क्या जानें! कहावत है- बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद! नरगिस, नूतन, वैजयंती माला, वहीदा रहमान, मुमताज जैसी हमारी फिल्मी हीरोइनें गजरा लगाती रही रही हैं. हैं. आपको फिल्म कटी पतंग का राजेश खन्ना और मुमताज पर फिल्माया गया गाना याद होगा- कजरा लगा के, गजरा सजा के, बिजुरी गिरा के जइयो ना, नैन मिला के चैन चुरा के निंदिया उड़ा के जइयो ना! इसी जोड़ी का एक अन्य गीत था- बिंदिया चमकेगी, चूड़ी खनकेगी, कजरा चहकेगा, गजरा महकेगा, तेरी नींद उड़े तो उड़ जाए !

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12018 - डॉ. सागर खादीवाला

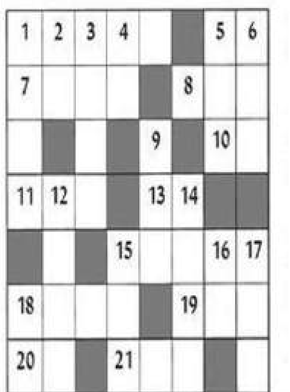

बाएं से दाएं
1. चूर-चूर शब्द होना या करना 5. समय का वह विभाग जो 24 सेकंड के बराबर होता है 7. टीस मारना, खिसकना 8. भाई का पुत्र 10. कहीं से कोई वस्तु लेकर आना, देना या सामने रखना 11. लाड़ या दुलार करना, इच्छा करना, प्यार करना 13. शत्रु, बैरी 15. पत्रकार का पेशा या व्यवसाय 18. कस्तूरी आदि का बना एक सुगंधित द्रव्य जो मुर्छित व्यक्ति को होश में लाता है 19. रक्त पीने वाला, राक्षस 20. जो खराब या निकृष्ट हो चुका हो 21. कोई शब्द या बात बार-बार कहना 22. कहकर मुकर जाना 23. देने काकार्य, खैरात

ऊपर से नीचे
1. लतीफा, छोटी विनोदपूर्ण बात 2. स्वाद, वनस्पतियों, फलों आदि का निचोड़ा हुआ तरल अंश 3. चुकता या बेबाक कराना, अदा कराना 4. राजा, अनुरक्त होना 5. तांबे या पीतल की बड़ी बटलोई 6. शरमाना 9. स्वभाव, जीवन में किए जाने वाले काम या आचरण 12. डगमगाना, झोंका खाकर नीचे आना 14. आवाज देना, चिल्लाकर बुलाना 15. पानी से धोना 16. खाली 17. वस्तु, शरीर आदि की वह गर्मी अथवा सर्दी की वह स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है 18. गोंद

Solution 12017

सु	न	ह	रा		शी		ख
र		बा	स		त	का	जा
मा	म	ला		ह	ला	का	न
	श	त	द	ल			जी
सा	हू		स	च	मु	च	
मू	र	त		ल	क	ल	क
हि		मा	वा		री		स्तू
क	ल	म	दा	न		छु	री

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में उतावलीपन में लिये गये निर्णय से हानि होगी, शत्रुपक्ष के षडयंत्रों के कारण मन व्यथित रहेगा, पूर्व नियोजित कार्यो में व्यस्तता रहेगी, वर्ष के मध्य में मित्रों व भाईयों के सहयोग से आर्थिक लाभ होगा, संतान पक्ष से नवीन योजनाओं का विचार विमर्श होगा, वर्ष के अन्त में सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी,जमीन जायजाद से लाभ मिलेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का शत्रु षडयंत्रों के कारण मन व्यथित रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की पूर्व निर्धारित कार्यो में व्यस्तता रहेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को संतान पक्ष से नवीन समाचार प्राप्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों के व्यवसाय में सुधार होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को सांसारिक सुखों की वृद्धि होगी,मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का खर्च अधिक रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नई योजनाओं का लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, कार्यकुशल, विवेकी, एवं मधुरभाषी होगा. अपनी बुद्धि और विवेक से काम करेगा. 26 वर्ष की आयु तक अस्थिर स्वाभाव का होगा. संपत्तिवान, एवं समयानुसार काम में जुटा रहेगा. व्यापार व्यवसाय के कार्य में अग्रणी होगा.

मेष- शुभ समाचार एवं अप्रत्याशित लाभ मिलेगा. महत्वपूर्ण कार्य योजना का विकास होगा. मनोंवांछित सफ्लता प्राप्त होने का योग है. संयम रखें.

वृषभ- राजकीय कार्यो में सफ्लता प्राप्त होगी. आय के साधन उपलब्ध रहेंगे. पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. स्त्री जाति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी.

मिथुन- पारिवारिक वातावरण में मानसिक प्रसन्नता रहेगी. मित्रता उपयोगी सिद्ध होगी. यश, मान सम्मान मिलेगा. धन प्राप्ति के मार्ग में अवरोध दूर होंगे.

कर्क- राजकीय कार्यो में सफ्लता मिलेगी. साझेदारी के कार्यो में सावधानी रखें. कार्यकुशला हितकर रहेगी. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी.

सिंह- साहस एवं पराक्रम में वृद्धि होगी. लाभ के अवसर मिलेंगे. नौकरी में उन्नति होगी. शारीरिक पीड़ा हो सकती है. व्ययभार करना होगा.

कन्या- सामाजिक कार्य बनने का योग है. खर्च की अधिकता रहेगी. नवीन योजनाओं पर विचार विमर्श का योग है. जमीनजायजाद के काम बनेंगे. संयम रखें.

तुला- सामान्य सुख सुविधाओं की प्राप्ति होगी. मांगलिक कार्यो पर विचार होगा. परिश्रम करने पर सफ्लता मिलने का योग है. साहस संयम रखें.

वृश्चिक- धार्मिक कार्यो के प्रति रूचि रहेगी. विलासिता की वस्तुओं का संचय होगा. यात्रा में सावधानी रखें. उठाईगीरों से सतर्कता बांछनीय.

धनु- नौकरी में कार्यकुशला बढ़ेगी. कामकाज की अधिकता रहेगी. माता पिता की चिन्ता रह सकती है. व्यापार व्यवसाय लाभदायक रहेगा.

मकर- पारिवारिक सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य बनने का योग है. व्यापार व्यवसायमें प्रगति होगी. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी. अतिथि आगमन होगा.

कुम्भ- इच्छित प्रयास अनुकूल सिद्ध होंगे. वातावरण में मधुरता रहेगी. बुद्धिमानी से कार्यो में सफ्लता प्राप्त होगी. मनोवांछित कार्य बनेंगे. सुख रहेगा.

मीन- आर्थिक एवं व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार होगा. वातावरण सुखद एवं अनुकूल रहेगा. मनोरंजन, यात्रा प्रवास आदि का योग बनेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

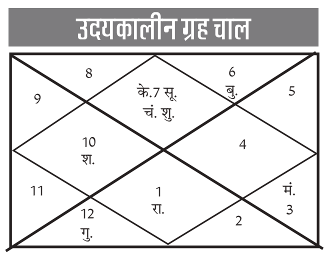

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2082 आश्विन कृष्ण चतुर्थी गुरूवासरे दिन 3/56, अश्विनी नक्षत्रे शाम 5/59, ध्रुव योगे रात 9/55, बालव करणे सू.उ. 5/51 सू.अ. 6/9, चन्द्रचार मेष, पर्व- चतुर्थी श्राद्ध, शु.रा. 1, 3, 4, 7, 8, 11 अ.रा. 2, 5, 6, 9, 10, 12 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

आश्विन कृष्ण चतुर्थी को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से वनस्पति तेल, सरसों, अरंडी, के भाव में तेजी होगी. गेहूँ, जौ, चना, सोना, चांदी के भाव सामान्य रहेंगे. पीतल, लोहा, में उतार चढ़ाव बना रहेगा. भाग्यांक 1507 है.

SUDOKU 7150

	7	9	4	2		6		3
	6		8		7		2	
4	1				3	5	8	
	9	8	3					
7		4		5		8		1
					9	7	3	
	8	5	7				4	6
	2		9		1		5	
3		1		6	8	9	7	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-डोकू 7149

8	9	5	1	3	7	2	4	6
7	3	2	6	5	4	1	8	9
1	6	4	8	9	2	7	5	3
5	7	3	4	2	9	6	1	8
4	2	8	5	6	1	3	9	7
6	1	9	3	7	8	5	2	4
3	5	1	9	4	6	8	7	2
2	4	6	7	8	5	9	3	1
9	8	7	2	1	3	4	6	5